Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

एथलीटों के अंतर्मुखी व्यक्तित्व लक्षणों और खेल प्रदर्शन के स्तर का एक सहसंबंधनात्मक अध्ययन

योगेंद्र सिंह राजपूत*

* शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – शिक्षा ही मनुष्य को अपने ध्येय तक पहुंचाने की राह है। इसके आधार पर मानव में ऐसे गुणों का विकास किया जा सकता है। जिसके आधार पर वह भली भाति अपने व्यक्तिव का विकास कर पाता है। समाज मे अपनी योग्यताओं को प्रदर्शित करने के लिए तथा उनके आधार पर व्यवसाय का चयन करने में मदद मिलती है। यही कारण है कि आज इस ओर विशेष रूप से बल दिया जा रहा है कि मानव को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाए। शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। यह देखा जाता है कि जिस कार्य के पीछे उद्देश्यों का निर्धारण नहीं किया जाता वह कार्य सुचारु रूप से संचालित नहीं किया जा सकता उसमें सफलता मिलने कि अवसर कम होते है।

प्रस्तावना – शारीरिक शिक्षा का संगठन बालक की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए ।समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनोरंजन की स्थापना करता है।शारीरिक शिक्षा मानव जाति की अनुपम उपलब्धियों को संजोकर रखता है तथा उन्हें भावी सन्तति को विरासत के रूप में प्रदान करता है ।इस प्रकार शारीरिक शिक्षा संगठन का उद्देश्य व्यक्ति को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना है कि वे समाज व आदर्शों, मान्यताओं, विश्वासों एवं मूल्यों की रक्षा कर सके।

आधुनिक काल में प्रदुषण तथा अन्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समावेश पाया जाता है ।यह देखा जाता है की बालक के द्वारा इन सभी के परिणामस्वरूप पूर्ण रूप से स्वस्थता की ओर अग्रसित नहीं हुआ जा सकता ।इसलिए यह अति आवश्यक माना जाता है कि आज मनुष्य को इन सभी प्रकोप से बचाने की ओर बल दिया जाए। शारीरिक शिक्षा के आधार पर यह एक कार्य भली भांति किया जा सकता है। इसके आधार पर बालक के द्वारा भली भांति उन्नति प्राप्त की जाती है। यह देखा जाता है की आज शारीरिक रूप से स्वास्थ्यता प्राप्त करने के उपरान्त ही मनुष्य के द्वारा पूर्ण रूप से विकास किया जा सकता है ।जब तक वह शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं होता है। तब तक वह भली भांति अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की क्रियाओ का क्रियान्वयन नहीं कर सकता।

अंतर्मुखी व्यक्तित्व खिलाडियों को अधिकता से परावृत्त करके खुद के बारे में सोचने पर मजबूर करता है ।जिससे उसे अधिकता का लाभ नहीं होता है ।रिले रेस जैसे मैदानी खेलों में अंतर्मुखी व्यक्तित्ववाले खिलाडियों के होने पर सामंजस्य के प्रभाव में प्रदर्शन के स्तर में गिरावट दिखाई देती है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन –

मिजूगूची (1972) ने होनेलूलू, हवाई में लड़कों के शारीरिक ज्ञान के कार्यक्रम (जूनियर/सीनियर) लड़कों के शारीरिक ज्ञान कार्यक्रम पर निरिक्षण हुआ।

सूची देनेवाले अधिकारीयों का समूह, कार्यक्रम की योजना, कार्यक्रम की विधियाँ, व्यवसाय द्वारा मदद, यह अध्ययन का एक उद्देश्य था की वह वास्तविक स्थिति की जानकारी दे सके , लडको के शारीरिक विद्या कार्यक्रमों के बारे में निरिक्षण कर सके, जाँच करने से की यह पूर्णरूप से ध्यान दिय जाता है कि नहीं ।अंत में उससे कहा की पूर्णरूप से कार्यक्रम पर्याप्त नहीं था तथा वास्तविक नियमो से काफी निचे था। जूनियर पाठशालाएँ के अपेक्षा कुछ कार्यक्रमों में सीनियर पाठशालाएँ अच्छी थी।

लोकेन्द्र शरण (1980) इन्होंने नागपूर विद्यापीठ में प्रस्तुत किये हुए हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल के शारीरिक शिक्षा के कार्य तथा खेलों का विकास करने में सम्बन्धित लघु प्रबन्ध में शारीरिक शिक्षक के योगदान का विवरण किया है ।यह अपने लघु प्रबन्ध में कहते है कि हनुमान व्यायाम प्रसारक मण्डल यह शारीरिक शिक्षक की एक ऐसी संस्था है ।जिसके माध्यम से शारीरिक शिक्षा द्वारा खेलों का क्षेत्रा ऊँचा उठा है। यह संस्था शारीरिक शिक्षा में विकास में अग्रेसर है, और अन्य खेलों की तरह ही इस संस्था ने विदर्भ के शहरी एवं ग्रामीण संभाग के विद्यार्थीयों में बास्केटबॉल खेल को बढ़ावा देने का कार्य किया है ।यह संस्था 1914 में स्थानित हुई तभी से शारीरिक शिक्षक तैयार करके अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर खेलों का विकास करने में अग्रसर है।

उप्पल, सिंधू और गंगोपाध्याय (1988) ने बट्स स्पोर्टस मोटीवेशन स्केल के आधार पर 15 भारतीय और 15 झिम्बाब्बीयन अंतर राष्ट्रीय महिला हॉकी खिलाड़ियों पर अध्ययन किया ।अध्ययन के अंत में यह निष्कर्ष निकला की दोनों ही टीमों में खेल प्रोत्साहन का स्तर समर्थक रूप से अलग-अलग नहीं है। सम्पूर्ण झिम्बाब्बीयन महिला हॉकी टीम संघर्ष के क्षेत्र में उच्च थी तो सम्पूर्ण भारतीय टीम आपसी तालमेल और सहकार्य के क्षेत्र में उच्च थी।

परिसीमाएं:

1. यह शोध कार्य दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर संभाग तक के विद्यार्थियों तक सीमित है।
2. यह शोध कार्य विश्व विद्यालय में अध्ययनरत एथेलेटिक्स प्रतियोगिता

में भाग लेने वाले पुरुष एथलीट विद्यार्थियों तक सीमित है।

उद्देश्य:

1. एथलिटों के अंतर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष तथा खेल प्रदर्शन स्तर का सहसंबंधनात्मक अध्ययन करना।
2. एथलिटों के बहिर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष तथा खेल प्रदर्शन स्तर का सहसंबंधनात्मक अध्ययन करना।
3. विभिन्न विश्वविद्यालयों के एथलिटों के अंतर्मुखी – बहिर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1. एथलिटों केअंतर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष तथा खेल प्रदर्शन में नकारात्मक सहसंबंध है।
2. एथलिटों के बहिर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष तथा खेल प्रदर्शन में सकारात्मक सहसंबंध है।
3. विभिन्न विश्वविद्यालयों के एथलिटों के अंतर्मुखी – बहिर्मुखी व्यक्तिव गुण विशेष वाले खिलाड़ियों में सार्थक अंतर है।

शोध पद्धति

उपकरण – प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के एकत्रीकरण करने हेतु निमलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया था।

1. श्री यज्ञ सिंह तथा एच. सी. चिमा द्वारा निर्मित स्पोर्ट्स स्पेसिफिक पर्सनल्टी टेस्ट।
2. अजीज एवं रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित इन्ट्रोवर्जन एवं एक्सटरोवर्षन इनवेंटरी प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया था।

परिणाम

1. अथलेटिक्स में सहभाग लेने वाले खिलाड़ियों कि व्यक्तित्व गुण विशेष को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि मैदानी खेलों में हिस्सा लेने वाले 56 प्रतिशत धावक तथा 22 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में अंतर्मुखता यह व्यक्तित्व गुण विशेष पाया गया तथा मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले 12.7 प्रतिशत धावक तथा 56.7 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में उभयमुखी / उभयवर्ती यह व्यक्तित्व गुण विशेष पाया गया। इसी तरह 31.3 प्रतिशत धावक तथा 21.3 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में बहिर्मुखता यह व्यक्तित्व गुण विशेष पाया गया।

2. अथलेटिक्स में सहभाग लेने वाले खिलाड़ियों कि क्रीडा प्रदर्शन को दर्शाया गया है। प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि मैदानी खेलों में हिस्सा लेने वाले 62 प्रतिशत धावक तथा 18 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में संतोषजनक क्रीडा प्रदर्शन पाया गया तथा मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले 23.3 प्रतिशत धावक तथा 58 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में साधारण क्रीडा प्रदर्शन पाया गया। इसी तरह 14.7 प्रतिशत धावक तथा 24.0 प्रतिशत जंपर्स खिलाड़ियों में असंतोषक क्रीडा प्रदर्शन पाया गया।

3. प्रस्तुत शोधकार्य में प्राप्त तथ्यों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप मे मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले धावकों एवं जंपर्स खिलाड़ियों कि अंतर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष तथा क्रीडा प्रदर्शन में सार्थक सहसंबंधनात्मक है।

4. प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले धावकों एवं जंपर्स खिलाड़ियों कि बहिर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष तथा क्रीडा प्रदर्शन में सार्थक सहसंबंधनात्मक है।

5. प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न जिलों के मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले खिलाड़ियों कि अंतर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष स्तर सार्थक रूप से भिन्न है।

निष्कर्ष – तुलनात्मक अध्ययन से यह प्रतीत होता है की मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले अधिकांश धावकों मे अंतर्मुखता तथा जंपर्स खिलाड़ियों में व्यक्तित्व गुण उभयमुखीध्उभयवर्ती व्यक्तित्व गुण विशेष पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य के अध्ययन से यह प्रतीत होता है की मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले धावकों मे जंपर्स खिलाड़ियों से अधिक संतोषजनक है।

प्रस्तुत शोधकार्य में प्राप्त तथ्यों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप मे मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले धावकों एवं जंपर्स खिलाड़ियों कि अंतर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष तथा क्रीडा प्रदर्शन में सार्थक सहसंबंधनात्मक है।

प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले धावकों एवं जंपर्स खिलाड़ियों कि बहिर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष तथा क्रीडा प्रदर्शन में सार्थक सहसंबंधनात्मक है।

प्रस्तुत शोध कार्य में संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न जिलों के मैदानी खेलों (अथलेटिक्स) में सहभाग लेने वाले खिलाड़ियों कि अंतर्मुखता – बहिर्मुखता व्यक्तित्व गुण विशेष स्तर सार्थक रूप से भिन्न है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. हेरोल्ड के. जैक, 'मिनेसोटा उच्च शिक्षा कार्यक्रम के शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का विश्लेषण,' रिसर्च ट्रामासिक 17 (मार्च 1946):24
2. गार्डनर एल. और हेनरी डब्ल्यू. रीकेन एडल्ट सब्जेक्ट्स के जर्नल ऑफ कंसल्टिंग साइकोलॉजी में मंदी का जन्म हो रहा है।, 15(1), 1951, पीपीपी 18–2।
3. केमिसन जे.,'वर्ष 1958–59 वाशिंगटन के साम्राज्य क्षेत्र के द्वीप में ग्रामीण सार्वजनिक प्राथमिक स्कूलों में शारीरिक शिक्षा का एक सर्वेक्षण,' स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन 2 (1960), पृष्ठ 72 में पूरा शोध।
4. मिजुगुची, एन.के., 'जूनियर एंड सीनियर हाई स्कूल होनोलूलू, हवली में फिजियोलॉजी के शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम कासर्वो,' निबंध सार इंटरनेशनल, 32, 1972, 3379ए–4166ए।
5. लोकेन्द्र शरण,'लघु प्रबंध हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल द्वारा शारीरिक शिक्षक तैयार करके खेलों का विकास में योगदान,' नागपुर विद्यापीठ में प्रस्तुत 1980
6. ए.के. उप्पल, ए.सिंधु, एण्ड एस.आर.गंगोपाध्याय,'अ स्टडी ऑफ स्पोर्ट्स मोटिवेशन ऑफ इंडियन एंड झिम्बोम्बिय वुमेन हॉकी टीम' एन.आय.इस.साइंटिफिक जनरल 11.2. (1988), 17.20

****